पाठ्यपुस्तकें और लैंगिक संवेदनशीलता 7

जेंडर संवेदनशीलता और रिमझिम शृंखला

लता पाण्डे*

जेंडर का मुद्दा मानवता का मुद्दा है। बच्चों में जेंडर संवेदनशीलता विकसित करने में विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। जब विद्यालयों की बात होती है तो कक्षा और सीखने-सिखाने की बात सबसे पहले होती है। पाठ्यपुस्तकों की मूल्यों के विकास में अहम भूमिका है। सीखने-सिखाने का साधन होने के कारण पाठ्यपुस्तकें सभी बच्चों के पास सहज रूप से उपलब्ध होती हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नयी दिल्ली द्वारा विकसित प्राथमिक स्तर की पुस्तकों के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि इनसे बच्चों में बचपन से ही जेंडर के मुद्दे को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो। यहाँ पर प्राथमिक स्तर की हिंदी तथा पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में दिया जा रहा है-

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षक का दायित्व बच्चों को केवल विषय ज्ञान देकर ही पूर्ण नहीं हो जाता है। बच्चों को संस्कार देना, उनमें मूल्यों का विकास भी शिक्षक को करना है। परस्पर सद्भाव, मिल-जुल कर काम करना, संवेदनशीलता आदि कितने ही मूल्यों का विकास अत्यंत सहजता तथा सरलता के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान किया जा सकता है। मूल्य न तो जबरन थोपे जा सकते हैं और न ही रातों-रात विकसित किए जा सकते हैं। बच्चे मूल्य आत्मसात कर सकें इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चों को इन्हें अनुभव करने के अवसर दिए जाएँ, उनके साथ ऐसी बातचीत की जाए कि वे मूल्य ग्रहण कर सकें। जेंडर का मुद्दा पूरी मानवता का मुद्दा है। बचपन से ही नन्हे बच्चों में जेंडर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाए तो स्वस्थ मानसिकता लेकर ही बच्चे विकसित होंगे। इसलिए विद्यालयी शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण हो जाता है। विद्यालय में अनेकानेक गतिविधियों

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

के माध्यम से बच्चों में जेंडर के मुद्दे के प्रति संवेदनशीलता का विकास किया जा सकता है। जब हम विद्यालय की बात करते हैं तो पाठ्यपुस्तकों का ज़िक्र करना स्वाभाविक है। हम सभी जानते हैं कि पाठ्यपुस्तकें शिक्षण का एक साधन मात्र है जिसका इस्तेमाल प्रत्येक शिक्षक अनिवार्य रूप से करता है। रिमझिम शृंखला जेंडर के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण के विकास में कैसे सहायक है? इसके अभ्यास तथा गतिविधियों पर कैसे चर्चा करें? शिक्षक की भूमिका क्या हो? इन्हीं सब बिंदुओं पर इस लेख में चर्चा की जा रही है।

भारतीय संविधान के अंतर्गत धर्म, जाति, वर्ग और लिंग आदि आधारों पर सबको समानता के अधिकार का प्रावधान है। स्वतंत्र भारत में बदलते समाज के साथ महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया है। उनकी साक्षरता दर बढ़ी है, वे आत्मनिर्भर हुई हैं, प्रत्येक कार्यक्षेत्र में उन्होंने अपनी पहचान बनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि समान अवसर मिले तो वे आसमान की बुलंदियों को छू सकती हैं। लेकिन खेद का विषय है कि इन बदलावों के बावजूद महिलाओं को लेकर हमारी सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं, मानक व्यवहारों और सोच में अपेक्षित बदलाव नहीं आया है।

आज भी आए दिन हर प्रकार के भेदभावों के उदाहरण देखने को मिल ही जाते हैं। संविधान लागू हुए छः दशक होने को आए हैं, आज ये भेदभाव ढीले तो हुए हैं पर मिट नहीं पाए हैं, क्योंकि हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में ये आज भी स्पंदन कर रहे हैं। विभेदीकरण का यह सामाजिक सांस्कृतिक आधार शायद इतना मज़बूत है कि आज तक इसकी जड़ें खत्म नहीं हो पाई हैं, समाजीकरण की प्रक्रिया आज भी निरंतर इन जड़ों को पोषण दे रही हैं।

शिक्षा एक ऐसी संस्था है जो समाज की अन्य सभी संस्थाओं को हर स्तर पर प्रभावित करती है इसलिए शिक्षा व्यवस्था में सतर्क, सक्रिय और सुनियोजित बदलाव लाने से लिंग आधारित विभेदों को दूर कर समानता लाने की चुनौती का सामना किया जा सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "समानता की दिशा में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका यह समझी जाती है कि यह सभी शिक्षार्थियों को अपने अधिकारों की दिशा में सजग बनाए ताकि वे समाज तथा राजनीति में अपना योगदान कर सकें। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि उन अधिकारों और सुविधाओं को तब तक लागू नहीं किया जा सकता जब तक केंद्रीय मानवीय क्षमताओं का विकास न हो जाए। इसलिए हाशिए पर धकेल दिए गए समाजों के विद्यार्थियों, विशेषकर लड़कियों के लिए यह मुमकिन होना चाहिए कि वे अपने अधिकारों का दावा कर सकें। इसके लिए शिक्षा को ऐसा होना चाहिए कि वे असमान समाजीकरण के नुकसान की भरपाई कर सकें कि आगे चलकर के स्वायत्त और समान नागरिक बन सकें।"

विद्यालयी शिक्षा परिवार से शुरू हुई समाजीकरण की प्रक्रिया का विस्तार है। अतः शिक्षा व्यवस्था में उन मूलभूत परिवर्तनों को

लाने की दिशा में गंभीर चिंतन और सुनियोजित कदम उठाने की आवश्यकता है जिनसे लैंगिक विभेदों को दूर कर एक स्वस्थ समाज की नींव रखी जा सके।

लिंग आधारित भेदभाव जनित रूढ़िगत मानसिकता में बदलाव लाना एक चुनौती है। इस चुनौती का सामना शिक्षा व्यवस्था में सुनियोजित बदलाव लाकर किया जा सकता है। इसके लिए अनेक प्रयास भी किए जा रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बीच में ही शाला त्यागने वाली बालिकाओं के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जैसी योजना की शुरुआत भी की गई है। पाठ्चर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है कि लैंगिक समानता के दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय-सामग्री का समावेश इनमें किया जाए।

पाठ्यपुस्तक में बच्चों में जेंडर के मुद्दे के प्रति समानता की सोच का विकास करने वाली विषय-सामग्री का समावेश हो तो निश्चित रूप से स्वस्थ मानसिकता लेकर बच्चों का विकास होगा। इसका कारण यह है कि पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा साधन हैं, जो विद्यालय जाने वाले प्रत्येक बच्चे को सुलभ होती हैं और पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा संसाधन है जो शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक शिक्षक के पास भी उपलब्ध होता है। शिक्षक भले ही शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किसी भी सहायक सामग्री का उपयोग न करे पर पाठ्यपुस्तक का उपयोग तो प्रत्येक शिक्षक करता ही है।

रिमझिम शृंखला और जेंडर संवेदनशीलता

बच्चों में किसी भी प्रकार के मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भाषा किसी भी संस्कृति में मूल्यों को बनाए रखने का कार्य करती है। भाषा की कक्षा में रोचक पाठ्यसामग्री के माध्यम से बच्चों में सरलता से मूल्यों का विकास किया जा सकता है। भाषा की कक्षा अनेकानेक ऐसे अवसर उपलब्ध कराती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा विकसित हिंदी की प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकें रिमझिम शृंखला में बालक-बालिकाओं के स्वर समान रूप से मुखरित हुए हैं।

आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों में लड़कों को साहसी कार्य करते, अपनी विवेकशीलता का परिचय देते, निर्णय लेते दर्शाया जाता है और लड़कियों के कार्यक्षेत्र का दायरा घरेलू कार्यों, उनकी दूसरों पर निर्भरता, उनमें निर्णय लेने की क्षमता का सर्वथा अभाव ही दिखाया जाता है। रिमझिम शृंखला ने इस परंपरा को तोड़ा है। रिमझिम की विभिन्न रचनाएँ और उनके अभ्यासों में आई बालिका पात्र वे सब कार्य करती हैं जो कि उनके समवयस्क बालक करते हैं। आइए, देखें कि रिमझिम की विभिन्न रचनाओं में जेंडर समानता को किस प्रकार पिरोया गया है।

रिमझिम की रचनाएँ

आमतौर पर लोककथाओं में महिलाओं की परंपरागत रूढ़िवादी छवि दिखलाई जाती है

लेकिन रिमझिम में दी गई लोककथाओं की महिला पात्र हिम्मत और सूझबूझ में इन कथाओं के पुरुष पात्रों से बढ़-चढ़ कर हैं। *रिमझिम-3* की पंजाब की लोककथा की 'बहादुर बित्तो' में किसान डरपोक है लेकिन उनकी पत्नी बित्तो अपनी सूझ-बूझ और हिम्मत का परिचय देती हुई शेर पर काबू पाती है तो रिमझिम-5 की तिब्बती लोककथा 'राख की रस्सी' की लड़की अपने विवेक चातुर्य से सबको चकित कर देती है।

इन लोककथाओं को पढ़ने के बाद नन्हे पाठकों के हृदय में स्वत: ही यह सोच विकसित होगी कि महिलाएँ बहादुरी में किसी से कम नहीं हैं।

रिमझिम-2 की कविता 'म्याऊँ-म्याऊँ' में बालिका पात्र पहले तो चुहिया से डरती है फिर तुरंत ही चुहिया को डराने का उपाय उसे सूझ जाता है। कविता बच्चों को गुदगुदाती है, साथ ही मुसीबत की घड़ी में युक्ति से काम लेना भी सिखाती है। कविता एक नन्ही बालिका की तत्परमति का परिचय देती है।

घर में निर्णय लेने का कार्य अकसर पुरूष सदस्य ही लेते हैं, लेकिन रिमझिम-4 में सम्मिलित कविता 'उलझन' में माँ, चाची और दादी को भी अपनी बात कहने का अवसर मिला है। कविता की कुछ पंक्तियाँ हैं-

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर।
भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कंप्यूटर।
चाचा कहते बनो प्रोफ़ेसर
चाची कहती अफसर।
दीदी कहती आगे चलकर
बनना तुम्हें कलक्टर।
बाबा कहते फौज में जाकर
जग में नाम कमाओ।
दीदी कहती घर में रहकर
ही उद्योग लगाओ।
सबकी अलग-अलग अभिलाषा
सबका अपना नाता।
लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ न पाता।

इस प्रकार यह कविता इस मिथक को तोड़ती है कि पुरुष ही निर्णय ले सकते हैं। कविता में विभिन्न पात्रों को निर्णय लेते हुए दिखाया गया है। इस कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 'भविष्य में क्या बनाना है' इस बारे में बच्चों से चर्चा की जा सकती है और कक्षा की लड़कियों से पूछा जा सकता है कि वह बड़ी होकर क्या बनना चाहती हैं?

रिमझिम-3 की रचना 'मीरा बहन और बाघ' के माध्यम से बच्चों को न केवल जानवरों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है बल्कि यह रचना मीरा बहन के व्यक्तित्व के एक पहलू से बच्चों को रू-ब-रू कराती है। इस पाठ के बाद चर्चा द्वारा बच्चों को बताया जा सकता है कि मीरा बहन गांधी जी की सहयोगिनी थी। उनके कार्यों की जानकारी बच्चों में यह समझ अवश्य विकसित करेगी कि महिलाओं का योगदान कमतर नहीं आँका जा सकता।

रिमझिम शृंखला की रचनाएँ भाषा शिक्षण के दौरान दूसरों के प्रति खासकर असमानता, समता या पृष्ठभूमि के अंतर के संदर्भ में बच्चों को संवेदनशील बनाने के अवसर भी देती है। *रिमझिम-4* की 'सुनीता की पहिया कुर्सी' और *रिमझिम-5* की 'जहाँ चाह वहाँ राह' की इला अपने पैरों से कसीदाकारी कर हिम्मत की अनूठी मिसाल नन्हे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। *रिमझिम-4* की कहानी 'सुनीता की पहिया कुर्सी' में सुनीता चल नहीं सकती लेकिन वह किसी भी कार्य में किसी के आश्रित नहीं रहती वरन् पहिया कुर्सी पर बैठकर अपने सारे कार्य स्वयं करती है।

आमतौर पर घरेलू कार्यों: जैसे- खाना बनाना, कपड़े धोना आदि लड़कियों के ही कार्य समझे जाते हैं और लडकों को इनसे कोसों दूर रखा जाता है लेकिन रिमझिम में बच्चे मिलकर सारे कार्य करते हैं। 'थप्प रोटी, थप्प दाल' *(रिमझिम-4)* में बच्चे मिलकर दाल-रोटी बनाते हैं और भरपूर आनंद उठाते हैं।

अधिकतर पाठ्यपुस्तकों में पढ़ना-लिखना जैसे कार्य करते हुए पुरुषों को ही दिखाया जाता है लेकिन *रिमझिम-2* की कहानी 'मेरी किताब' की वीरू सभी नन्हीं पाठिकाओं के दिलों में पढ़ने के प्रति रूझान जगाती हुई यह संदेश दे जाती है कि अवसर मिले तो विभिन्न रंग-बिरंगी किताबें पढ़ना सभी बच्चों को चाहे लड़के हों या लड़कियाँ समान रूप से अच्छा लगता है।

यहाँ पर यह भी ध्यान रखने वाली बात है कि पाठ्यपुस्तक में केवल रचनाएँ समाहित कर देने से ही विद्यार्थियों में जेंडर संवेदनशीलता विकसित नहीं की जा सकती। इसके लिए ज़रूरी है कि उन रचनाओं पर बच्चों से भरपूर चर्चा की जाए।

रिमझिम के अभ्यास तथा गतिविधियाँ

रिमझिम शृंखला में अभ्यास तथा गतिविधियों के माध्यम से पाठ्यसामग्री पर चर्चा के पर्याप्त अवसर दिए गए हैं। जब तक शिक्षक अभ्यास तथा गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का ध्यान आकर्षित न करें, बच्चों से इन पर चर्चा न करें तब तक ठोस रूप से कुछ हासिल नहीं होगा।

रिमझिम-4 में ही 'थप्प रोटी, थप्प दाल' नाटक के बाद एक अभ्यास है-तुम्हारे घर में खाना कौन बनाता है? तुम खाना बनाने में क्या-क्या मदद करते हो? नीचे दी गई तालिका में लिखो।

इस सवाल का जवाब देने के लिए बच्चों को लिखना पड़ेगा कि वे खाना बनाने में किस प्रकार मदद करते हैं। इसी प्रक्रिया के दौरान उन्हें यह एहसास होगा कि उन्हें भी घर के कामों में सहायता करनी चाहिए। इस प्रकार निश्चित रूप से चर्चा द्वारा उनमें यह संवेदनशीलता जाग्रत की जा सकती है कि घर के काम मिल-जुलकर करने चाहिए।

रिमझिम-3 में 'बहादुर बित्तो' लोककथा के पश्चात् अभ्यास के अंतर्गत एक प्रश्न है- बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

यह सवाल निश्चय ही कक्षा की सभी बालिकाओं को प्रश्न का उत्तर तो विचारने का अवसर देगा ही, बहादुर बित्तो की तरह ही

कुछ वीरता के कारनामे करने की सोच भी उनमें उपजाएगा। किसी बालिका अथवा महिला पात्र को अपनी सूझ-बूझ और हिम्मत का परिचय देते हुए कोई कार्य करते हुए दिखाया जाए तो शिक्षक/शिक्षिकाओं को बच्चों से चर्चा करने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है। बच्चों से- तुम्हें रानी की हिम्मत कैसी लगी? तुम उसकी जगह होतीं तो क्या करती? क्या तुम अपने आसपास किसी बहादुर लड़की को जानते हो- इस तरह की चर्चा कर उनमें यह भावना विकसित की जा सकती है कि अवसर मिलने पर बालिकाएँ/महिलाएँ भी वीरता के कारनामे कर सकती हैं। इस प्रकार की चर्चा जहाँ लड़कों में स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करेगी वहीं लड़कियों में भी इससे वीरता की भावना संचरित होगी।

'बहादुर बित्तो' कथा के अंतर्गत ही अभ्यास दिया गया है। कई जगहों पर गाँवों में औरतें खेतों में भी काम करती हैं। तुम्हारे आस-पास की औरतें और लड़कियाँ क्या-क्या काम करती हैं?

यह अभ्यास कक्षा के सभी बच्चों का ध्यान महिलाओं द्वारा किए जाने वाले कार्यों की ओर आकृष्ट कर अत्यंत सहजतापूर्वक नन्हे हृदयों में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले श्रम और उनके कार्यों के प्रति श्रद्धा तथा गौरव का भाव विकसित करने में समर्थ है। बच्चों से यह भी पूछा जा सकता है कि वे घर के किन-किन कार्यों में माता-पिता की सहायता करते हैं? इस प्रकार की चर्चा निश्चित रूप से कक्षा के लड़कों में भी घर के कार्यों में हाथ बँटाने की भावना उत्पन्न करने में सहायक होगी।

रिमझिम-3 में एक अभ्यास दिया गया है- रोटी बनाने के लिए कितना कुछ काम करना पड़ता है: जैसे- आटा गूँथना, बेलना आदि। पता करो और लिखो कि इन्हें बनाने के लिए क्या करना पड़ता है-

- चाय बनाने के लिए
- सब्ज़ी बनाने के लिए
- दाल बनाने के लिए
- हलवा बनाने के लिए
- लस्सी बनाने के लिए

इस अभ्यास को हल करने के दौरान कक्षा के सभी बच्चों को स्वत: ही इन सभी कार्यों की जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

रिमझिम-3 में एक अभ्यास के अंतर्गत बच्चों से पूछा गया है- तुम घर के कौन-से काम करते हो। अपने कामों के बारे में बताओ।

यह अभ्यास सभी बच्चों को घर के काम करने की प्रेरणा देता है।

रिमझिम-5 की तिब्बती लोककथा 'राख की रस्सी' का एक सवाल है-

- इस लड़की का तो सभी लोहा मान गए। है न सचमुच नहले पर दहला। तुम्हें भी यही करना होगा।

यह अभ्यास इस लोककथा में वर्णित लड़की की सूझबूझ और बुद्धि कौशल की ओर सभी बच्चों का ध्यान आकर्षित करना है। बच्चों को यह भी संदेश देता है कि कठिन परिस्थिति आने पर सूझबूझ से काम लेना चाहिए। साथ ही अत्यंत सहजता से यह संदेश देता है कि लड़कियाँ किसी भी कार्य में लड़कों से पीछे

नहीं है। लोककथा में लड़की ही बालक पात्र भोला की सभी समस्याओं का हल सुझाती है।

रिमझिम-5 में ही 'जहाँ चाह वहाँ राह' पाठ के अंत में एक अभ्यास दिया गया है- एक सादा रूमाल लो या कपड़ा काटकर बनाओ। उस पर नीचे दिए गए टाँकों में से किसी एक टाँके का इस्तेमाल करते हुए बड़ों की मदद से कढ़ाई करो। इस अभ्यास के अंत में निर्देश दिया गया है- ये काम कक्षा के लड़के-लड़कियाँ सब करें।

इस प्रकार *रिमझिम* के अभ्यास कक्षा के सभी बच्चों से मिल-जुल कर कार्य करवाने के संकेत देते हैं।

रिमझिम के चित्र

किसी भी पाठ्यपुस्तक में चित्रों की अहम भूमिका होती है। रंग-बिरंगे चित्र न केवल किताब को आकर्षक बनाते हैं बल्कि विषय को ग्राह्य करने में भी सहायक होते हैं। चित्रों के माध्यम से बच्चों में अनेक मूल्य विकसित किए जा सकते हैं। मूल्यों के विकास में रिमझिम के चित्र सहायक हैं। *रिमझिम-1* में रसोईघर के दृश्य में एक लड़का चावल बीन रहा है। यह दृश्य सभी पाठक बालकों में यह भाव विकसित करने में सहायक है कि घर में काम लड़के-लड़कियाँ दोनों कर सकते हैं। इसी प्रकार से *रिमझिम-3* की लोककथा 'बहादुर बित्तो' में भी दर्शाया गया चित्र बित्तो की बहादुरी का परिचायक है। *रिमझिम 5* का 'जहाँ चाह वहाँ राह' पाठ में इला सचान का चित्र सभी पाठक बच्चों को प्रेरणा देता है कि शारीरिक चुनौतियों का सामना करते हुए हिम्मत से काम किया जाए तो जिंदगी में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है।

पाठ्यसामग्री में दिया कोई चित्र यदि नारी की रूढ़िवादी छवि प्रस्तुत करता है तो उसकी ओर भी बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। जैसे *रिमझिम-3* के पाठ 'क्यों जीमल और कैसे-कैसलिया' में एक चित्र दिया गया है जिसमें महिला को रोटी बनाते दिखाया गया है। इस चित्र पर बच्चों से बातचीत की जा सकती है कि क्या केवल महिलाओं का काम ही भोजन बनाना है।

रिमझिम में बच्चों को अनेक स्थानों पर चित्र बनाने को दिए गए हैं। इनके अलावा शिक्षक स्वयं भी ऐसे अवसर सृजित कर सकता है जहाँ बच्चे चित्र बनाएँ और ऐसे अवसरों पर नारी की सकारात्मक छवि वाले चित्रों पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

इस प्रकार *रिमझिम शृंखला* की विषय सामग्री लिंग आधारित पूर्वाग्रहों से मुक्त है। रिमझिम शृंखला की विषय सामग्री, चित्र और उनके साथ दिए गए अभ्यासों में ऐसे अवसर भरपूर मात्रा में मिलते हैं, जिनसे बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक इन अवसरों का सही ढंग से उपयोग करे।

शिक्षक की भूमिका

आजकल सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत आयोजित सभी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में

जेंडर संवेदनशीलता विषय पर सत्र अवश्य रहता है। इस दिशा में सर्वप्रथम कदम तो यह है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सीखी गयी बातों को अपनी कक्षाओं में व्यावहारिक जामा पहनाएँ। शिक्षक साथी तभी बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं, जब वह स्वयं किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह/दुराग्रह से मुक्त हों। इसलिए स्वयं में जेंडर के मुद्दे के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करें।

एक अच्छा शिक्षक/शिक्षिका वही है जिसके पास अनगिनत कहानियों का खजाना हो, नाना कविताएँ जिसकी ज़ुबान पर रची-बसी हों, जिसके पास सूचनाओं का भंडार हो। इनके माध्यम से वह बातों ही बातों में बच्चों में जेंडर के मुद्दे के प्रति समानता की सोच का विकास कर सकता है। अनेक लोककथाएँ साहसी महिलाओं के वीरतापूर्ण कार्यों से गुँथी हुई हैं। कहीं कोई महिला स्वविवेक से हिम्मत का परिचय देती हुई कोई निर्णायक कदम, उठाए चाहे वह बालविवाह का विरोध हो या दहेज का विरोध कर बारात लौटाने जैसा कदम ऐसे समाचारों पर कक्षा में चर्चा की जा सकती है। बालिकाओं में भी स्वयं निर्णय लेने की क्षमता की सोच तथा ताकत ऐसे समाचार ज़रूर देंगे। कक्षा में तथा कक्षा के बाहर प्रत्येक क्रियाकलाप में लड़के-लड़कियों दोनों की समान रूप से भागीदारी सुनिश्चित करना भी इस दिशा में अच्छा प्रयास होगा। कई सह-शिक्षा विद्यालयों में देखा गया है कि उपस्थिति रजिस्टर में पहले लड़कों के नाम दर्ज किए जाते हैं फिर लड़कियों के। इसे बदलना आपके ही हाथों में है।

आज भी हमारे समाज में कई घरों में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। अगर विद्यालय में किसी बालिका की उपस्थिति नियमित न हो, वह अचानक विद्यालय आना बंद कर दे तो विद्यालय के शिक्षकों तथा प्रधानाचार्या का दायित्व बनता है कि वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त कर उस बालिका की आगे शिक्षा जारी रखने में सहायता करें। बाल-विवाह जैसी कुरीतियों तथा इसके दुष्प्रभावों से अभिभावकों को जागरूक भी उनसे बातचीत द्वारा कराया जा सकता है।

नन्हे बालक बड़े होकर लिंग आधारित पूर्वाग्रहों से मुक्त हों, इसके लिए ज़रूरी है कि उनसे समय-समय पर यह भी चर्चा होती रहे कि वे अपनी बहनों का उनके कार्यों, पढ़ाई में कितना सहयोग करते हैं तथा उनकी बहनें उन्हें कितना सहयोग देती हैं। ऐसी चर्चाएँ निश्चित रूप से नन्हे बच्चों को कुछ सोचने-विचारने का मौका देकर समय आने पर सार्थक कदम उठाने को अवश्य प्रेरित करेंगी। बड़े होकर यह बालक भी तो भाई, पति, पिता आदि की भूमिकाओं में कई महत्वपूर्ण निर्णयों के भागीदार तथा ज़िम्मेदार होंगे।

पाठ्यपुस्तक में निहित रचनाओं में यदि कोई शब्द या वाक्य ऐसा लगे जो कि जेंडर के प्रति पूर्वाग्रह से युक्त हो, तो बातचीत द्वारा उसे दूर किया जा सकता है। इस प्रकार की चर्चा एक स्वस्थ दृष्टिकोण को जन्म देगी। *रिमझिम शृंखला* में बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जगाने तथा पढ़ने की आदत के विकास के लिए कई रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए दी गई हैं। ऐसी

रचनाओं के साथ अभ्यास तथा गतिविधियाँ नहीं दी गई हैं। ऐसी ही एक चित्रकथा *रिमझिम-2* में है- बिल्ली कैसे रहने आई, आदमी के संग। इस चित्रकथा में बताया गया है कि बिल्ली कैसे पहले जंगल में रहती थी। फिर एक दिन कुछ ऐसी घटना घटी कि वह शेर से डरकर गाँव की ओर भागी और गाँव वालों ने उसकी सहायता की। उस दिन से वह मनुष्यों के साथ रहने लगी। इस चित्रकथा के शीर्षक में 'आदमी' शब्द रूढ़िवादी सोच को दर्शाता है। इस पर कक्षा में की गई चर्चा से सभी बच्चों में निश्चित रूप से यह सहमति बनेगी कि इस चित्रकथा का शीर्षक 'बिल्ली कैसे रहने आई, आदमी के संग के स्थान पर बिल्ली कैसे रहने आई, मनुष्य के संग' होना चाहिए था।

विद्यालय में कक्षा के अंदर तथा बाहर दोनों ही में बालक-बालिकाओं के स्वर समान रूप से ही मुखरित हों, ऐसे अवसर तो अनेक होते हैं लेकिन उनका सही ढंग से उपयोग काफी हद तक शिक्षक पर निर्भर करता है।

पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यास तथा गतिविधियाँ संकेत मात्र हैं। ऐसी ही अन्य गतिविधियाँ स्वयं सोच कर कक्षा में करवाई जा सकती हैं। विद्यार्थियों से अपने गाँव/शहर की किसी महिला के बारे में बताने के लिए कहा जा सकता है जिसने किसी भी क्षेत्र में कोई अच्छा कार्य किया है। उनसे उनके घर की बुजुर्ग महिलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर उनके योगदान की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है। विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान इस बात के प्रति सजग रहें कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा चाहे वह बालिका हो या बालक बातचीत में भाग ले। बातचीत में जितना बच्चे सक्रिय भागीदारी करेंगे, जेंडर के मुद्दे के प्रति उनकी समझ उतनी ही अधिक विकसित होगी।

जेंडर संवेदनशीलता का मुद्दा कोई ऐसा मुद्दा नहीं है कि इस पर बच्चों को अलग से उपदेश देने की आवश्यकता है। कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही अत्यंत सहजता से बच्चों में जेंडर संवेदनशीलता जाग्रत की जा सकती है। बस ज़रूरत है पाठ्यसामग्री को समझने की, अभ्यास तथा गतिविधियों के भरपूर उपयोग करने की तथा कक्षा में तथा कक्षा के बाहर लड़कियों और लड़को को समान अवसर देने की। घर से समाजीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत होती है। लेकिन समाजीकरण की प्रक्रिया की वे त्रुटियाँ जो घर में रह जाती हैं, उन्हें विद्यालय में दूर किया जा सकता है और इस कार्य में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली।
2. *रिमझिम*-1,2,3,4,5